हिन्दी उपन्यास : नारी विमर्श

संपादक
डॉ० शोभा वेरेकर

अभय प्रकाशन, कानपुर

ISBN : 978-93-80719-06-1

पुस्तक : हिन्दी उपन्यास : नारी विमर्श

संपादक : डॉ० शोभा वेरेकर

प्रकाशक : अभय प्रकाशन, 6A/540, आवास विकास
हंसपुरम् कानपुर–208 021
Mo. : 09451877266, 09305301995

संस्करण : प्रथम 2010

मूल्य : 360.00

शब्दसज्जा : विष्णु ग्राफिक्स, गल्ला मण्डी
नौबस्ता, कानपुर, मो० 08009017637

मुद्रक : मधुर प्रिण्टर्स
किदवई नगर, कानपुर

जिल्दसाज : तवारक अली, पटकापुर, कानपुर

HINDI UPANYANS : NARI VIMARSH

By : Dr. Shobha Verekar

Price : Rs. Three Hundred Sixty Only

7.

नारी अस्मिता की तलाश

— डॉ० वृषाली सुभाष मांद्रेकर

वर्तमान दौर में नारी-मुक्ति, नारी-समानता, नारी-अस्मिता की खोज आदि विषयों को कथा-लेखिकाओं ने धडल्ले से अपनाया है। इन्हीं में से एक मृदुला गर्ग है। वह नारी जीवन की त्रासदी; विसंगति तथा आधुनिक परिवेश में नारी के बदलते आयामों को सजीव रूप में अभिव्यक्त करती है।

अपने उपन्यासों में स्त्री-विमर्श के इन विभिन्न पहलुओं को उन्होंने उजागर किया है। एक ओर नारी आर्थिक दृष्टि से सक्षम है, अपने अधिकारों के प्रति जागृत है, तो दूसरी ओर परंपरागत ढाँचे से दबी हुई अपनी अस्मिता की खोज कर रही है। मानसिक तौर पर विविध घात-प्रतिघातों से लड़ रही है। इन्हीं यातनाओं से गुजरते हुए नारी किस तरह संघर्षशील है तथा उसमें क्या परिवर्तन हुआ है, चाहे वह भारतवर्ष की हो या समृद्ध अमेरिका की हो हर जगह वह शोषित उत्पीड़ित होने के लिए किस प्रकार बाह्य है, इसकी संवेदनशील अभिव्यक्ति मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में प्राप्त होती है।

मृदुला गर्ग का 'कठगुलाब' अन्य उपन्यासों की तुलना में काफी चर्चित रहा है। बहुत सारे प्रशंसकों ने इस उपन्यास की सराहना की है। किसी समीक्षक ने उसे नारीवादी उपन्यास कहा, तो किसी ने उसे नव उपनिवेशवादी उपन्यास, किसी ने उसे नारी विद्रोह एवं मनोविश्लेषणवादी उपन्यास भी करार कर दिया। किसी भी दृष्टि में वह बंझर परिप्रेक्ष्य और बाँझ अनुभवों की प्रतीक कथा के रूप में चित्रित हुआ है।

इस उपन्यास में अभिव्यक्त नारी संघर्ष अस्मिता की तलाश एवं परिवर्तित दृष्टि की ओर जाने से पूर्व संक्षिप्त रूप से 'वंशज' एवं 'चित्तकोबरा' उपन्यासों की चर्चा करते हैं।

वंशज (१९७६) 'उसके हिस्से की धूप' आदि प्रकाशित हुआ, जिसमें पिता-पुत्र के संघर्ष को, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को समझने में उत्पन्न वैमनस्य, दरारें उनके कारणों को दर्शाता है। सुधीर हमेशा पिता के उन मूल्यों का विरोध करता रहता है जो अंग्रेजी संस्कृति तथा बाहरी दिखावे के कारण उनमें पनप चुके

हैं। लेकिन जब कभी उसे पैसों की आवश्यकता होती है, तो रेवा के माध्यम से पैसे लेने में उसे कहीं अफसोस नहीं होता। सुधीर का विरोध इसलिए एकलफी महसूस होता है।

पिता शुक्लासाहब जज्ज है, तो स्वाभाविक है कि पेशे के अनुरूप खान-पान, रहन-सहन में शिस्त-प्रियता एवं नियमबद्धता है, लेकिन इस उपन्यास में दोनों एक दूसरे को समझने में असफल हैं। सुधीर के कोई ठोस प्रिसिंपल्स नहीं है, न तो वह कोयलाखान के मजदूरों के हकों के लिए लढ़ पाता है, और न ही, पिता द्वारा दी गयी जायदाद ठुकरा पाता है। उसमें 'न्यूरोसिस' की स्थिति पैदा हो जाती है। राजेन्द्र यादव के कथनानुसार– 'उपन्यास की थीम है कि दृष्टि और साधनहीन व्यक्तिगत विद्रोह निश्चय ही विद्रोह करने वाले में 'न्यूरोसिस' पैदा करेगा या तो आत्महत्या करेगा या पागल हो जाएगा।

पुरुष पात्रों की तुलना में रेवा और सविता को सक्षम दिखाया है। पारिवारिक जिम्मेदारियों को जितनी कुशलता से सविता संभालती है उतना ही सुधीर उनसे दूर भागता है। आपसी असमंजस्य एवं टकराव के कारण सुधीर एवं सविता दोनों एक दूसरे को समझ नहीं पाते न हीं उन दोनों विचारों का आदान-प्रदान होता है। शायद मृदुला गर्ग नारी के इस परिवर्तित रूप को इस उपन्यास के माध्यम से चित्रित करना चाहती है, जो सांसारिक जिम्मेदारियों को वहन करने में सक्षम है।

'चित्तकोबरा' में यह तलाश अन्य स्तर पर अभिव्यक्त होती है। यहाँ पारंपरिक घेरे को तोड़ते हुए स्वतंत्र जीवन जीने की लालसा मनु में दृष्टिगोचर होती है। इसी प्रकार पारंपरिक मानमर्यादा विवाहसंस्था तथा आधुनिकता भूमण्डलीकरण के प्रवेश से पनपते नये मूल्यों में भी संघर्ष दिखायी देता है। इस उपन्यास में विवाहेत्तर सम्बन्धों में आकर्षण एवं विवाह सम्बन्धों में अनाकर्षण को चित्रित कर मृदुला गर्ग कहीं विवाह संस्था पर प्रश्न चिह्न तो नहीं लगा रही है।

परंपरा से शादी होने के बाद विवाहिता को अर्धांगिनी कहा जाता था, लेकिन समय के बदलते नारी पुरुष की अनुगामिनी बनकर जीना पसंद नहीं करती। वह आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने के कारण स्वच्छंद जीना चाहती है, जिसकी परिणति विवाह संस्था के त्याग में हो रही है।

मनु और महेश, जैनी और रिचर्ड दोनों दम्पत्ति अपने वैवाहिक बंधनों से खुश नहीं हैं, मनु रिचर्ड को चाहती है, कारणस्वरूप महेश से वह परे रहना चाहती है, उधर रिचर्ड भी जैनी से तादात्म स्थापित नहीं कर पाता, फिर भी मनु और रिचर्ड अपने वैवाहिक बंधनों को त्यागकर एकत्रित नहीं आते। यह उपन्यास स्त्री-पुरुष के शारीरिक सम्बन्धों तथा मानसिक स्थितियों को उजागर करता है।

इन दोनों उपन्यासों की तुलना में 'कंठगुलाब' वास्तव में नारी शोषण के खिलाफ उठायी गयी वह आवाज है जिसमें पढ़ी-लिखी, साधन-सम्पन्न औरत

स्मिता अपनी मनोग्रंथियों से मुक्त नहीं हो पाती और साधनहीन, अनपढ़ नर्मदा अपने सारे बंधन तोड़कर स्वतंत्र हो जाती है। जैसे तारा अग्रवाल ने स्वीकार किया है कि 'अपने कथ्य को प्रतिपादित करते हुए लेखिका इन विभिन्न नारी पात्रों का संघर्ष और कर्म धर्म और मर्म का निरूपण करती हुई पुरुष सत्ता के समानान्तर स्त्री सत्ता निर्मित करने के लिए जद्दोजहद करती हुई दिखाती है।"

स्त्री को अपनी अस्मिता की तलाश में संघर्षरत होना पड़ा। चाहे वह स्मिता हो, मारयान हो असीम हो या निम्नवर्गीय नर्मदा हो इनके उपन्यासों में अधिकांश स्त्री-चरित्र मध्यवर्गीय हैं, शिक्षित एवं स्वावलंबी है जो अपनी अस्मिता की खोज में लगे हैं। फिर भी हम कह सकते हैं– भारत तथा विदेशी परिवेश में सहने झेलने और जूझने के लिए अभिशप्त नारी की व्यथा-कथा का वर्णन 'कठगुलाब' की विषयवस्तु है।

स्मिता जीजा द्वारा बलात्कार होने पर यह तय करती है कि वह उनसे बदला लेगी। लेकिन सारे हालातों को जानने के बाद बहन की बातों को सुनकर अपनी पढ़ाई करने हेतु घर छोड़ती है। वह अपनी अस्मिता की तलाश बड़ौदा के बजाए कानपुर जाकर आत्मनिर्भर होकर पढ़ाई पूर्ण करके करना चाहती है, उसी दौरान उसे अमेरिका के वास्टन विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र (एम० एस०) में दाखिला मिल जाता है। आर्थिक स्थिति सक्षम न होने से वह रॉ (रिलीफ फॉर एब्यूज्ड वुमैन) में असिस्टेंट का कार्य स्वीकारती है। रॉ में लांछित, प्रताड़ित बलात्कृत, पीड़ित औरतों के लिए काम करते हुए अर्थशास्त्र को छोड़कर सोशियोलॉजी में एम० एस० करती है। उसके बाद 'डिपराइव्हड गर्ल चाइल्ड' इस प्रोजेक्ट पर कार्य करने फेलोशिप लेकर यु० एस० ए० की दिल्ली में स्थित शाखा 'आक्सफॉम' में पहुँचती है और असीमा का साथ पाकर 'गोथड़' को अपना कार्यक्षेत्र चुनती है।

स्वयं को तलाशती स्मिता अनवरत शोषण एवं प्रतारणा से उकताकर प्रतिशोध एवं विद्रोह की मुद्रा में खड़ी है। वह जीजा से चाहते हुए भी प्रतिशोध नहीं ले पायी थी, परंतु जिस जारविस के अत्याचारों का बदला जरूर लेना चाहती है। वह जीजा के मरने के बाद सोचती है कि– 'वह दरिंदा तो इंतकाम का मौका दिए बगैर मर गया, लेकिन जिम जारविस को फरार होने का मौका नहीं देना है। बहुत कुछ सोचती तो है लेकिन यह सोच-सोच ही रह जाती है। वह जैसे 'गोधड़' क्षेत्र में जाकर उस दुनिया में रम जाती है।

लेकिन एक बात स्वीकार करनी पड़ेगी कि बलात्कार की प्रतिक्रिया आत्महत्या, अपराधबोध और बेचारगी से प्रतिशोध की तरफ आई है। मर्दों द्वारा सताने या अत्याचार करने के बाद खुद पिट-पिट कर नहीं आयी थी, बल्कि 'पर इस बार मैं, अन्य एब्यूज्ड वुमेन से कुछ फर्क थी। मैंने चुपचाप मार नहीं खाई थी, पलटकर जिम की खासी ठुकाई कर दी थी। आगे लेखिका यह स्वीकार करती

है कि दिन पर दिन उसके जरिए अपनी आजादी वापस पाने का सपना देखा था पर कर कुछ नहीं पाई थी।..... बस जो कुछ करना है, तत्काल करना होगा। ऐसा न हो कि मैं रोती-कलपती रह जाऊँ और मेरा अपराधी सजा पाने से पहले, एक बार फिर, खुद अपनी मौत मर जाय।"

स्मिता से सक्षम चरित्र नर्मदा है क्योंकि वह भारत जैसे देश में बिना पति के आत्मनिर्भर हो जाती है। अपनी अलग पहचान बनाने के लिए कोशिश करती है। २१वीं सदी में भी समाज पुरुष प्रधान है जहाँ स्मिता सिर्फ सोचती रहती है वहाँ नर्मदा अपने जीजा द्वारा सताने पर नाखून से जमीन कुरेदती डरपोक नर्मदा शेरनी के रूप में परिवर्तित हो जाती है और कहती है कि 'फिर कभी इस घर में आने की हिम्मत की तो दोनों टाँगे तोड़ के सड़क पर फेंक दूँगी। भड़वे, जा अपनी बीबी के पल्लू में जाके सो। मैं तेरी रखैल ना थी, तू मेरी रखैल था। कमा–कमा के तुझे खिलाया मुस्टंडे, इसीलिए कि तू और तेरी बीबी मिलके मेरा हक मारो। जा, नामर्द समझ के अपना हिस्सा माफ किया। पर याद रख, एक दिन आके वसूल कर लूँगी। वह मेरी बहन ना दुश्मन है, पहले जान लेती तो तुम दोनों की बोटी-बोटी काट के चील-कौवों को खिला देती। हिम्मत हो तो आ मेरे सामने। और वह सचमुच चाकू खोल खड़ी हो गई।"

'चाकू खोल खड़ी होना'– शायद नारी-मुक्ति का उपाय है। इस चरित्र के माध्यम से हम जान पाते हैं कि नारियाँ प्रतिवाद करेगी तो उनके अत्याचार कम हो जायेंगे। नर्मदा आर्थिक स्वावलम्बन को भी नारी-मुक्ति का एक जरिया मानती है।

अति आधुनिक विचारों को अपनानेवाली है असीमा जब से जान चुकी है कि इन मर्दों के घेरे में जीने के लिए होम सायन्स की नहीं कर्राटे की जरूरत है, तब से अपना वेतन खर्च कर वह कर्राटे सीख रही है। और जरूरत पड़ने पर नर्मदा के क्रूर पति को ऐसे आड़े हाथों ले लेती है कि वह कुछ दिनों के बाद लकवे से ग्रस्त हो जाता है। हमेशा संघर्षरत असीमा को लगता है कि मानवीय सम्बन्धों में दरारें उत्पन्न हो गयी है। वह अपने पिता एवं भाई से अच्छे सम्बन्ध कायम नहीं कर पाती, वह पिता को हरामी नं. १ और भाई को हरामी नं० २ कहती है– क्योंकि उसका पिता दूसरी औरत के कारण माँ का त्याग करता है, समाज में घटित इन घटनाओं के कारण उसका विवाह-संस्था में भी विश्वास नहीं है। परिवेश में पीड़ित इन नारियों को देखकर उसके मन में मर्दों के प्रति घृणा उत्पन्न होती है। उन्हें देखते ही लात घूसों से पीटने उनके दिमाग पर चोट करने उन्हें बहस में हराने, तिरस्कृत करने और उन्हें तिलमिलाने की तीव्र लालसा मन में उठती है। उसे यह लगता है कि "औरते अपनी लड़ाई खुद क्यों नहीं लड़ती, किसी हरामी का सहारा क्यों लेती है।"

इन अत्याधुनिक विचारों से असीमा अपने अस्तित्व की तलाश कर रही है, हर एक पुरुष को हरामी के लिस्ट में जोड़ती है। इन सभी हरकतों से पुरुष समाज के प्रति विरोध, द्वेष, घृणा स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है। लेकिन यह नारी-मुक्ति के लिए सही पर्याय नहीं हो सकता कभी-कभी तो खुद नारी ही दूसरी नारी पर जुल्म करती है, उदाहरणस्वरूप स्मिता की बहन को ले सकते है। इसलिए असीमा की विचारधारा मुझे एकलकी महसूस होती है। यह अति आधुनिक प्रवृत्ति कहीं समाज को बरबादी की ओर तो नहीं ले जाएगी ?

समाज में स्त्री-पुरुष दोनों ही समान रूप से आवश्यकता है। समाज के पारंपरिक स्वरूप में बदलाव आना स्वाभाविक है लेकिन पुरुष को हरामी के लिस्ट में जोड़कर पुरुषविहीन समाज की रचना सरासर गलत है।

मारियान का संघर्ष अलग धरातल पर है। मीठी-मीठी बातों से इर्विंग ने उसे धोखा दिया है। उसके द्वारा लिखे जरनल के सहारे 'वुमेन' ऑफ द अर्थ' उपन्यास का सृजन किया है। लेकिन आगे पीछे पुस्तक में कहीं भी उसके योगदान के लिए आभार प्रकट नहीं किया गया है ना ही समर्पण में उसका नाम है। यह सब होने के बाद वह उस पर गालियों की बौछार करती है– 'कपटी, धूर्त नामर्द, बास्टर्ड, 'मैने फुत्कारकर कहा था, 'पूरा का पूरा मेरा जरनल टीपकर छपवा लिया। यह सरासर चोरी है। कमीने मैं कभी तुम्हें माफ नहीं करूँगी, इसका बदला लेकर रहूँगी।' लेकिन इर्विंग ने मारियान के खिलाफ पुलिस स्टेशन में जाकर अपने घावों के चित्र खिंचवाकर अदालत में तलाक के लिए अर्जी दी थी। यह भी कहा था कि अपनी पत्नी पर हिस्टीरिया या मानसिक विकार के दौरे पड़ते थे।

इतना सब कुछ भोगने के बाद भी गैरी कूपर से बच्चे की इच्छा से शादी करती है। जिससे शायद लेखिका यह स्वीकारना चाहती है कि किसी औरत में पूर्णता बच्चा जनने के बाद ही आती हो, वह कहीं न कहीं उसके सृजन को चाहती है। और उसकी अंतरात्मा की आवाज जेल्डा फिटज़ैरल्ड के माध्यम से भी उभर कर आयी है बरसों से जो नारी पर अत्याचार हो रहा है उसको सहते हुए हम देख सकते है– 'हर औरत में जुल्म उठाने की ऐसी महारत देखी जा सकती है कि सोफिस्टिकेटेड-से-सोफिस्टिकेटेड औरत भी, कहीं न कहीं, एक मामूली किसान औरत की तरह कलपती पाई जाती है।" यहाँ धनिया की याद आती है। इस उपन्यास में नारी संघर्ष करती है लेकिन असीमा और नर्मदा को छोड़कर अन्यों की स्थिति जेल्डा फिटरजैरल्ड की तरह ही है। मारियान कहती है कि 'वह जेल्डा नहीं मारियान है, प्रलाप से रोदन और रोदन से प्रलाप के बीच झूलती, धोखेबाजी से पार पाने में नाकाम, फेमिनिन वाइल्स से मक्त, एक तुच्छ स्त्री।'

इस प्रकार कठगुलाब में स्त्री की वैविध्यपूर्ण इमेजों विचारगत भिन्नता उनके संघर्ष को चित्रित करते हुए प्रमुख रूप से परंपरागत स्टीरियोटाइप इमेज को तोड़ना चाहा है। उनके माध्यम से नए मूल्यों का प्रवेश हुआ है। अन्याय का

विरोध करते हुए नारी में परिवर्तित होने की क्षमता है जिसका सबल प्रतिरूप है 'कठगुलाब'।

यहाँ 'जो जैसे है' उस यथार्थ को चित्रित करने के लिए मृदुला गर्ग ने किसी परिकल्पना का सहारा नहीं लिया। समाज व्यवस्था में नारी को जिस हिराकतभरी दृष्टि का सामना करना पड़ता है, या जिस तरह से व्यवस्था से टकराना पड़ता है, जिन खस्ता हालातों में जीना पड़ता है, उनसे रूबरू होते हुए उन चरित्रों को जीवंत बनाया। इस दृष्टि से उपन्यास में गालियों का, असभ्य भाषा का प्रयोग भी स्थान–स्थान पर हुआ है। फिर भी भाषा प्रयोग सहज सरल सम्प्रेषणीय, पात्रानुकूल तथा प्रसंगानुकूल है। अंग्रेजी का प्रयोग भी 'कठगुलाब' के भाषा सौन्दर्य में निखार लाता है। एक बात अवश्य कहना चाहूँगी कि यह उपन्यास पढ़ते हुए मराठी के शिवाजी सामंत के 'मृत्युंजय' की याद अनायास आती है। वहाँ जिस तरह से 'कर्ण' के चरित्र की सृष्टि में उसकी माँ कुंती, कृष्ण, शोण, वृषाली आदि के अलग-अलग अध्याय कार्यरत है वैसे ही 'स्मिता' को समझने के लिए मारियान, असीमा आदि के अध्यायों से अलग दृष्टिकोण तथा धरातल प्राप्त होता है।